देश को किरण का योगदान

"हट मेरे रास्ते से" किसी लड़के ने स्कूल जाते वक्त किरण से कहा। वह बिना कुछ बोले ही धीरे से रास्ते से हट गया। उस रास्ते से स्कूल जाने वाले किरण जैसे बहुत बच्चे हैं। किन्तु वे सब दिखते तो किरण जैसा नही। बाकी के सारे बच्चे बहुत धूम-धाम से पैतल या दौडकर स्कूल की ओर प्रस्तान करते हैं। पर किरण तो ऐसा नही कर सकता! उसे भी मन करता है बाकी बच्चों के तरह स्कूल जाने को, शायत वह ऐसे कभीभी नही कर पाएगा। कारण बताना तो किरण

के लिए सरल है। क्योंकी सिर्फ इतना ही बताना है कि "मेरा पैर चलने लायक नही" पर सहना! वो तो उतना सरल नही।

स्कूल में उसे दोस्त कहने को तो एक या दो बच्चे है। पर किरण के दिल में स्कूल में जितने भी बच्चे है, सारे के सारे उसका दोस्त है। फिर भी वो सारे के सारे बच्चे किरण से दोस्ती तो नही करता। उन बच्चों का तो यह मानना है कि किरण एक गंद्रा लडका है।

एक दिन जब किरण स्कूल के आंगन में बैठकर चिडियों को देख रहा था तब उसकी ही कक्षा के कुछ लडके आकर उसे छेडाने लगा। पहले तो किरण उनके हरकतों में ध्यान नही दे रहा था, यह देखकर वह लडके उसे शारीरिक पीडायें पहुचाने लगा। किरण को उनके हरकतों में परेशानी महसूस होने लगा। किरण रोना

शुरू कर दिया। वह अध्यापक को बुलाने लगा, "गुरुजी बच्चाओ, गुरुजी मुझे बच्चाओ ये लोग मुझे पीड़ा पहुंचा रहे है..."। किरण की यह चिल्लाहट सुनकर वो बच्चे तो भाग गए पर किरण को यह घटना अपने दिल में सदा चोट पहुंचाती रही।

घर में जाकर सदा वह अपने माँ से स्कूल के सारी अच्छी और बूरी बात बताता था। "माँ आज गुरुजी ने मुझसे प्रश्न पूछा और ~~मैंने~~ मेने सभी उत्तर अच्छे से कहा और गुरुजी मेरे ~~अभी~~ अभिनंदन किये!" यह सुनकर माँ कहती, "हाँ बेटा मुझे पता है कि मेरा बेटा सही उत्तर देगा।" "और माँ आज भी बच्चों ने मेरी मज़ाक उड़ाई।" "कोई बात नही लल्ला, तुम उन सब में ध्यान मत दो" "हाँ माँ मैं कोशीश तो करता हूँ।" "तुम जब बड़े बनोगे और एक अच्छा नोकरी पाओगे तब उन बच्चों को

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 312

हम दिखायेंगे कि किरण कौन है!" "हाँ माँ मैं अच्छे से पढाई करूगा और बडा होकर देश को एक महत्व पूर्ण योगदान दूँगा और सात-सात दुनिया को यह सन्देश भी दूँगा कि पैर चलने लायक नही है, इस का मतलब यह नही कि वह मानव भी कोई काम की नही। ऐसे लोग भी ~~चरित्र~~ चरित्र मैं अपनी योगदानें देश के आगे बडने को दे सकते है!" माँ ने सिर्फ एक मुस्कान जवाब जैसे दिया, उस मुसकान ने किरण के चहेरे पर भी एक मुसकान लाया। किरण अपने कमरे में जाकर पढाई शुरू कर दी।

उस चलने न लायक पैर को लेके जब वो स्कूल धीरे से खिसके जाता तब और बाकी के सभी समय उसके मन में तो एक बडे लोकरीदार बनने का

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

सपना तैर रहा होता। किरण की माँ का यह सपना था कि सूरज की रोशनी की तरह किरण सबको रोशणी देता रहे।

किरण की पिताजी काम करते वक्त एक छत के ऊपर से गिर कर मर गया था। तब किरण को सिर्फ चार साल ही था। अब तो एक और चार साल निकल चुके है। वह अच्छे से पढ़ाई किया और अपने कक्षा के प्रथम स्थान प्रात किया। यह सब माँ को सदा आनंद के अनुभूती देती रही।

एक दिन जब किरण स्कूल से वापीस घर आ रहा था तब कुछ लडको ने आकर उसे परेशान करना शुरु किया। उन बच्चों ने किरण से कहा कि, "तुम कितना विरूप दिखते हो, यह सडक पर खिसते-खिसते तुम्हारे पाव में कितने छोट है और तुम्हारे कपडा! कितना गंदा है।

सारे के सारे मिट्टी और इस सडक की कचरे से भरा हुआ है।" किरण ने बहुत ही सरल शब्दों में कहा कि, "कोई बात नही। अब मुझे घर जाना है। मेरे रास्ते से हटो।" "ऐसे कैसे हटू, हमे तुमसे एक महत्व पूर्ण बात बताने को है।" उनमें से किसी ने कहा। "जो भी बताने को है जल्दी बताओ। मुझे घर जाने को है।" "हमे तो तुमसे यही बताने को है कि तुम आज के बात कभीभी स्कूल मत आओ। क्योंकी तुम्हारे वजह से घर से हम बहुत डाट खाते है। हमारे माता-पिता कहते है कि तुम्हे देखकर पढो और हमे यह बात कता भी पसंद नही।" "तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। मैं तो यही कह सकता हूँ की तुम लोग भी अच्छे से पढो। यही ही एक मार्ग है!" इतना कह कर किरण घर के ओर प्रस्थान किया। ~~इसके~~

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 312

उसने जाते वक्त भी मन में कहा कि, "मैं तो पढ़ूँगा. यह लोग ऐसे कुछ भी कहते रहेंगे, इतने में मैं क्यों अपनी स्कूल जाना बंद करूँ? मुझे बड़ा बनकर अपनी देश को एक अच्छा योगदान देना है और यही मेरा सपना है। मैं तो यह सपना पूरा करके ही रहूँगा।"

वह साल ऐसे ही बीत गया। कुछ लोग किरण को परेशान करते रहे और कुछ लोग उसे अभिनंदन करते रहे। सपना पूरा करने का चक्कर में किरण सदा व्यस्त रहा। स्कूल के उस साल के आखरी दिन 'अच्छा छात्र' के सम्मान किरण को मिला। उसने बहुत खुशी से घर जाकर माँ को वह दिखाते हुए कहा "माँ देखो, मैं मेरा सपने के ओर एक कदम और फिर्से रख दिया।" माँ ने मुसकुराते

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

इक अपने बेटे से कहा, "ज़रूर लल्ला! मुझे पता है। मेरे बेटा भविष्य में इस देश को क्या इस दुनिया को रोशणी देगा और अंधेरे में इक कीमती मोती के भांती झमक उठेगा।" "ज़रूर माँ, मैंने फैसला लिया है कि मैं बड़े बनकर बीचारे बच्चों को पढ़ाऊंगा और उन्हे पढ़ाई का महत्व बताऊंगा। मुझे इस के लिए थोड़ा सा तो अमीर बनना होगा। इसकेलिए इक अच्छा नौकरी पाना होगा।"

"अरे वा, लल्ला! तुम तो इक अच्छे विचार का सपना देखा है। तुम्हारा यह सपना ज़रूर पूरा होगा। इससे तो तुम इक नही अनेक किरणों से रोशणी फैला सकते हो।"

साले भीत गए। आज किरण पढ़ाई करने के लिए पैसा न होने से पढ़ाई रुक रोकनेवाले बच्चों को सहायता

दे कर ऐसे बच्चों को अच्छी ~~विद्याभ्यास~~ पढ़ाई देने वाली एक कमपनी का ~~डिरेक्टर~~ मैनेजर है। किरण वीलचैर में बैठकर शहर के गलियों में सैर करकर ऐसी बच्चों का तलाश करता और उन्हे अपने साथ लेजाकर सारी सुविधाओं के साथ पढ़ाता।

यह सब करते समय भी किरण के दिल में उसका ~~इ~~ सपना ऐसे ही तैरता रहा जैसे कि तब ~~वह~~ तैरती थी जब वो बच्चा था। "मैं कैसे मेरे देश को योगदान दूँ। देश के भलाई ही तो एक अच्छा योगदान है। तो मैं देश की भलाई के लिए यह सारे बच्चों को पढ़ाकर ज्ञान संमपन्न बनाकर देश को सच्चाई के मार्ग में चला सकता हूँ। वह दिन आने को अभी ~~ज्यादा~~ ज़्यादा समय तो नहीं।"

किरण अपने सपने को सच बनाने के लिए बहुत परिश्रम की। उसने वह बच्चों को अच्छाई और सच्चाई के अनेक पाठ सिखाए।

एक दिन वह सारे बच्चे ~~मनोर~~ मनोरंजन के लिए पहाड़ों में घूम ने के लिए निकल पड़े। वे बच्चे बड़े खुशीसे ज़गलों में घूमते रहे। जब वे ऐसे चलते रहे तब उन में से एक ने एक गुफा देखा। उसने कहा, "चलो साथियों, क्या हम उस गुफा के अन्दर जाकर देखें?" वे सब गुफा के ओर चले, किन्तु जब वे उस गुफा के पास पहुँचे उन्हें कुछ बुरा महसूस हुआ। उन्होंने देखा कि कुछ बुरे लोग एक छोटे बच्चे को ~~मार~~ बहुत ज़ोर से मार रहा था।

वह सारे बच्चों ने मिलकर वह बच्चे को बचाने की कोशीश की। बहुत समय का लड़ाई के बाद ~~के~~ ~~ब~~ वह

को उन्होंने बचाया और वह बुरे लोगों को पोलीस के हवाले कर दिया।

यह घटने के बात किरण और वह बच्चों को देश ने अनुमोदन किया। यह वक्त किरण को अपनी सपना पूरा होकर होने का महसूस हुआ। वह अपने योगदान में बहुत खुश था और मुसकुराते रहा। कैसे मुसकुराया। जैसे वह अपने माँ के साथ बच्चा होते समय मुसकुराया करता जब वह अपने यह सपने माँ से बताया करता....